अनुवाद

आसुरी स्वभाव वाले मनुष्य नहीं जानते कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। उनमें न तो शरीर और अन्तःकरण की शुद्धि होती है, न सदाचार होता और न सत्य ही होता है।।७।।

तात्पर्य

किसी भी सभ्य समाज में कुछ ऐसे शास्त्रीय विधि-विधान अवश्य रहते हैं, जिनका आजन्म पालन किया जाता है। आर्यों के सम्बन्ध में, जो वैदिक संस्कृति को मानते हैं और सबसे अधिक सभ्य समझे जाते हैं, यह विशेष रूप से सत्य है। जो शास्त्र-विधि को नहीं मानते, वे असुर हैं। इसीलिए कहा है कि असुरों में न तो शास्त्र-विधि का कुछ ज्ञान होता है और न ही उसके पालन में उनकी कभी प्रवृत्ति ही होती है। अधिकांश में तो वे शास्त्र के विधान को जानते ही नहीं और यदि कुछ जानते भी हों तो उसके पालन में प्रवृत्त नहीं होते। उनमें लेशमात्र भी श्रद्धा नहीं होती, इसीलिए वे कभी वैदिक-विधान के अनुसार कर्म करना नहीं चाहते। असुर शरीर और अन्तःकरण दोनों प्रकार से अशुद्ध रहते हैं। शरीर की शुद्धि के लिए नियमित रूप से स्नान, दन्त-धावन, वस्त्र-परिवर्तन, आदि करते रहना चाहिए। जहाँ तक अन्तःकरण की शुद्धि का सम्बन्ध है, श्रीभगवान् के स्मरण के लिए **हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे** इस महामन्त्र का निरन्तर जप-कीर्तन करना चाहिए। आसुरों को बाहर-भीतर की शुद्धि के ये नियम न तो रुचिकर होते और न ही वे इनका पालन करते हैं।

मनुष्य के सदाचरण के लिए मनु संहिता जैसे अनेक विधि-विधान हैं, जिनका विधान सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए है। आज भी ऐसे मनुष्य हैं, जो मनु के विधान का अनुसरण करते हैं। उत्तराधिकार आदि के विधान इसी मनु संहिता से निकले हैं। इस शास्त्र में उल्लेख है कि स्त्री को कभी स्वतन्त्रता नहीं देनी चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं कि स्त्रियों को पराधीन बनाकर रखा जाय। अभिप्राय यह है कि स्त्रियाँ बालकों के समान ही अल्पज्ञ होती हैं। बालकों को स्वतन्त्र नहीं छोड़ा जाता; परन्तु उसका अर्थ यह नहीं कि वे पराधीन रहते हैं। असुर इन विधानों की उपेक्षा कर रहे हैं। वे सोचते हैं कि स्त्रियों को पुरुषों के समान स्वतन्त्रता होनी चाहिए। परन्तु इससे जगत् के सामाजिक तन्त्र में कोई सुधार नहीं हुआ है। वास्तव में स्त्री को जीवन के पथ-पथ पर संरक्षण की अपेक्षा है। कौमार अवस्था में उसे पिता का संरक्षण चाहिए, यौवन में पति का और वृद्धावस्था में पुत्रों का संरक्षण अपेक्षित है। मनुसंहिता के मत में यही सामाजिक सदाचार हैं। दुर्भाग्यवश, आधुनिक शिक्षा ने स्त्रियों की स्वतन्त्रता की एक कृत्रिम गर्विष्ठ धारणा को जन्म दिया है, जिससे विवाह मानवसमाज का एक काल्पनिक सम्बन्ध मात्र बनकर रह गया है। परिणामस्वरूप, वर्तमान समय में स्त्रियों का घोर नैतिक पतन हुआ है। सारांश में, कहने का भाव यह है कि असुर ऐसे किसी